



डीआरडीओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

समाचार

डी आर डी ओ द्वारा वायु प्रतिरक्षा अपरोधी मिसाइल का परीक्षण

डी आर डी ओ ने उड़ीसा के अपतट पर स्थित व्हीलर्स द्वीप से स्वदेश विकसित उन्नत वायु प्रतिरक्षा (ए ए डी) अपरोधी मिसाइल का परीक्षण किया। अपरोधी मिसाइल ने 15 किलोमीटर की ऊंचाई पर सामने से आ रहे बैलिस्टिक मिसाइल को सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया। लक्ष्य मिसाइल जो पृथ्वी का एक आशोधित रूप था, और जो दुश्मन के बैलिस्टिक मिसाइल की एक प्रतिकृति था, चांदीपुर स्थित प्रक्षेपण परिसर III से लांच किया गया था। दूर स्थित लंबे परास के कर्षण तथा बहुप्रकार्य रडारों ने मिसाइल को उड़ान भरने के समय से ही अभिज्ञात किया तथा इसके संपूर्ण पथ में इसका अनुवर्तन किया। निर्देशन कंप्यूटर की सहायता से आ रहे मिसाइल के प्रक्षेपण पथ का निरंतर अनुमान लगाया



जाता रहा। तदपुरांत सामने से आ रहे बैलिस्टिक मिसाइल का सामना करने और उसे नष्ट करने के लिए एक उपयुक्त समय पर ए ए डी मिसाइल को लांच किया गया।

लक्ष्य मिसाइल में स्थित रिंग लेजर जाइरो आधारित नौसंसूचन प्रणाली, अपरोधी मिसाइल में प्रयुक्त फाइबर ऑप्टिक जाइरो आधारित जड़त्वीय नौसंसूचन प्रणाली (आई एन एस), तथा समापन चरण हेतु प्रयुक्त ऑनबोर्ड कंप्यूटर, निर्देशन प्रणालियों, प्रवर्तक प्रणालियों तथा क्रांतिक रेडियो फ्रीक्वेंसी (आर एफ) खोजी प्रणालियों (सीकर) द्वारा अत्युत्तम रूप में निष्पादन किया गया। आरंभ में जड़त्वीय नौसंसूचन प्रणाली (आई एन एस) द्वारा निर्देशित ए ए डी मिसाइल प्रणाली एक डेटा लिंक के माध्यम से रडार द्वारा लक्ष्य मिसाइल की स्थिति के संबंध में अद्यतन स्थिति के बारे में निरंतर जानकारी प्राप्त करती रही। आर एफ सीकर ने लक्ष्य मिसाइल का अनुवर्तन किया तथा ए ए डी मिसाइल के ऑनबोर्ड कंप्यूटर ने इसे लक्ष्य मिसाइल की ओर निर्देशित किया।

इस अंक में

- डी आर डी ओ द्वारा वायु प्रतिरक्षा अपरोधी मिसाइल का परीक्षण
- भूत ज्योलोकिया/बोरबिह ज्योलोकिया को एक नई आदर्श प्रजाति के रूप में स्थापित किया गया
- डी आर डी ओ द्वारा स्वदेश विकसित ए ई डब्ल्यू एंड सी प्रणाली का उड़ान परीक्षण किया गया
- उन्नत कर्षित तोपखाना बंदूक प्रणाली (ए टी ए जी एस) के अभिकल्पन तथा विकास के संबंध में डी आर डी ओ-उद्योग जगत के बीच पारस्परिक संबंध
- डी आर डी ओ व्याख्यान
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां
- वार्षिक/स्थापना दिवस समारोह
- कार्मिक समाचार
- रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील) में रक्तदान शिविर का आयोजन
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण



ए ए डी मिसाइल में सज्जित रेडियो प्रॉक्सिमिटी फ्यूज ने स्फोटक शीर्ष (वार हेड) का स्फोटन किया और इस प्रकार इसने लक्ष्य मिसाइल को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। इस परीक्षण से बहुल अपरोधकों से युक्त बहुल लक्ष्यों के अपोधन की विशिष्ट सुविधाओं का प्रदर्शन हुआ। 1500 किलोमीटर के रेंज के इलैक्ट्रॉनिक लक्ष्य को लांच किया गया था। रडारों ने लक्ष्य मिसाइल की पहचान की तथा उसका अनुवर्तन किया तथा तदुपरांत एक इलैक्ट्रॉनिक अपरोधी मिसाइल को प्रक्षेपित किया। इलैक्ट्रॉनिक अपरोधी मिसाइल ने इलैक्ट्रॉनिक लक्ष्य मिसाइल को 120 किलोमीटर की ऊंचाई पर नष्ट किया। सभी चारों मिसाइलों का रडारों द्वारा अनुवर्तन किया गया तथा बहुल लक्ष्यों का अपरोधन करने के लिए बहुल अपरोधकों से युक्त निर्देशन तथा लांच कंप्यूटरों का पूरे प्रचालनात्मक मोड में उपयोग किया गया। चारों मिसाइल आकाश में एकसाथ पहुंचे तथा उनका अपरोधन भी लगभग एक समय पर ही किया गया। इस परीक्षण से बहुल लक्ष्यों को बहुल अपरोधकों की सहायता से

एकसाथ नष्ट करने में डी आर डी ओ की क्षमता प्रमाणित हुई। इस मिशन में संपूर्ण रडार प्रणालियां, संचार नेटवर्क, लांच कंप्यूटरों, लक्ष्य के बारे में अद्यतन जानकारी देने वाली प्रणालियों तथा अत्याधुनिक उड्डयानिकी को सफलतापूर्वक प्रमाणित किया जा सका।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव तथा डी आर डी ओ के महानिदेशक डॉ वी के सारस्वत ने वायु प्रतिरक्षा क्षमताओं के इस सफलतापूर्वक प्रदर्शन हेतु डी आर डी ओ के सभी वैज्ञानिकों को बधाई दी। परीक्षण के दौरान, डी आर डी ओ के विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक श्री अविनाश चंद्र, श्री एस एस सुंदरम, श्री सुंदरेश, तथा आई टी आर के निदेशक श्री एम वी के वी प्रसाद एवं अन्य शीर्षस्थ वैज्ञानिक उपस्थित थे। संपूर्ण प्रचालन श्री अदालत अली, कार्यक्रम निदेशक ए डी के निर्देशन में कार्यान्वित किया गया। इस शानदार उपलब्धि के लिए माननीय रक्षा मंत्री श्री ए के एंटनी ने डी आर डी ओ के वैज्ञानिकों की प्रशंसा की।

भूत जोलोकिया / बोरबिह जोलोकिया को एक नई आदर्श प्रजाति के रूप में स्थापित किया गया

रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डी आर एल), तेजपुर ने पूर्वोत्तर भारत में उगाई जाने वाली मिर्च की एक किस्म भूत जोलोकिया को एक नई आदर्श प्रजाति के रूप में *कैप्सिकम असामिकम* का नाम दिया। इस प्रजाति को असामिकम का विशेष नाम इसे सर्वप्रथम असम में पाए जाने के आधार पर दिया गया है। इस प्रजाति पर कार्य कर रहे डॉ जुबिली पुरकायस्थ ने बताया कि सेंट्रल नेशनल हर्बेरियम, हावड़ा, कोलकाता स्थित हर्बेरियम के परामर्श से तथा संगत साहित्य (हूकर, 1885; कूर्ज, 1887; कांजिलाल *तथा अन्य*, 1940; हरिदासन तथा राव, 1987) का अध्ययन करके यह ज्ञात हुआ कि भूत जोलोकिया लाल रंग से लेकर नारंगी रंग के फल, बहुकोशीय अधित्वचीय रोमों, मृदूतकीय कॉरटेक्स, अंतःत्वचा



अपने प्राकृतिक वास स्थान में भूत जोलोकिया।

की उपस्थिति, मृदूतकीय मज्जा के चारों ओर सतत वलय के रूप में रंभ (स्टेल) आदि के संदर्भ में कैप्सिकम फ्रुटसेन्स के सदृश है। बाह्य दलपुंज में संकुचन प्रत्येक आसंधि पर बहुत से फूलों की उपस्थिति तथा पंचतई पुष्प स्थिति के कारण इस प्रजाति को कैप्सिकम चाइनीज की श्रेणी में माना गया है, किंतु यह प्रतिदर्श

अपने वास स्थान, पत्तियों, पुष्प और फल की आकारिकी तथा तने के संरचनात्मक विवरणों के दृष्टिगत कैप्सिकम की किसी भी अन्य प्रजाति से भिन्न है।

भूत जोलोकिया के विस्तृत अध्ययन से एक नई आदर्श प्रजाति के रूप में इसका अस्तित्व ज्ञात होता है। इसके संबंध में निष्कर्षों को ओजियन जर्नल ऑफ एप्लाइड साइंसेज, 2012, 5 (1), 55–66 में प्रकाशित किया गया है।

डी आर डी ओ द्वारा स्वदेश विकसित ए ई डब्ल्यू एंड सी प्रणाली का उड़ान परीक्षण किया गया

स्वदेश निर्मित वायुवाहित पूर्व-चेतावनी तथा नियंत्रण (ए ई डब्ल्यू एंड सी) प्रणाली से सज्जित ई एम बी-1451 वायुयान ने मिशन प्रणाली के लिए आंतरिक वायरिंग का कार्य तथा वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बेंगलूरु द्वारा मिशन प्रणाली हार्डवेयर संस्थापन के कार्य का समापन होने के पश्चात भारत में पहली बार 29 सितंबर 2012 को उड़ान भरी। इसका निरीक्षण मैसर्स एम्ब्रायर द्वारा किया गया तथा इसके लिए किलयरेंस सैन्य उड़न योग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक) द्वारा जारी किया गया। इस वायुयान ने 8 अक्टूबर 2012 को वायु सेना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में भी भाग लिया।



ए ई डब्ल्यू एंड सी प्रणाली का उड़ान परीक्षण।

उन्नत कर्षित तोपखाना बंदूक प्रणाली (ए टी ए जी एस) के अभिकल्पन तथा विकास के संबंध में डी आर डी ओ-उद्योग जगत के बीच पारस्परिक संबंध

डी आर डी ओ पूणे स्थित आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई) में एक 155 मिलि मीटर/52 कैलरी की उन्नत कर्षित तोपखाना बंदूक प्रणाली (ए टी ए जी एस)



प्रतिभागियों को संक्षेप में बताते हुए श्री दातार।

विकसित की जा रही है। इस बंदूक प्रणाली के लिए उन्नत फायर पावर विकसित करना प्रमुख अपेक्षा है ताकि अधिक लंबे रेंजों पर एकसाथ मार करने के संबंध में प्रथम प्रभावी स्थिति, उच्चतर परिशुद्धता हासिल की जा सके तथा हम अपने अस्तित्व को अधिक प्रभावकारी बना सकें। उन्नत आयुध निष्पादन प्राप्त करने के लिए आयुध मंचों के लिए नई प्रौद्योगिकियों, स्वचालित प्रणालियों तथा नियंत्रित प्रणालियों, प्रतिक्षेपण प्रबंधन, सामग्री आदि हेतु नई प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

अभिकल्पन, विकास, विनिर्माण तथा समेकन में उद्योग जगत की भागीदारी को प्रोत्साहन प्रदान करने तथा इसके लिए एक व्यापक आधार सृजित करने के लिए ए आर डी ई में 29-31 अक्टूबर

2012 के दौरान डी आर डी ओ-उद्योग जगत के बीच एक पारस्परिक संबंध स्थापित करने के लिए सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का उद्देश्य ए टी ए जी एस को विकसित करने के दौरान भारतीय उद्योगों की उपयुक्त भागीदारी/सहयोग की संभावना की तलाश करना था।

प्रणाली स्तर तथा उप-प्रणाली स्तर पर विकास तथा विनिर्माण कार्य को करने में सक्षम उद्योगों ने डी आर डी ओ की टीम के साथ पारस्परिक वार्ता की जिसमें आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई),

यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई), देहरादून; वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर; कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिक केंद्र (केयर), बेंगलूरु; तथा डी आर डी ओ मुख्यालय के प्रतिनिधि डॉ एस सुंदरेश, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (ए सी ई एवं एस आई) की अध्यक्षता में शामिल हुए थे। श्री अनिल एम दातार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ए आर डी ई ने ए टी ए जी एस के विकास हेतु अपेक्षाओं तथा उद्योग जगत की भागीदारी से डी आर डी ओ किस प्रकार सर्वोत्तम रूप में प्राप्त कर सकता है, इसके संबंध में एक सम्यक वार्ता

प्रस्तुत की। प्रणाली स्तर की पारस्परिक संपर्क वार्ता में 6 अग्रणी भारतीय कंपनियों अर्थात् टाटा पावर, एस ई डी, बेंगलूरु; एल एंड टी, मुंबई; भारत फोर्ज लिमिटेड, पुणे, महेंद्र डिफेंस सिस्टम्स, पृथला, हरियाणा; बी एच ई एल, हरिद्वार; तथा बी ई एल, चेन्नई ने भाग लिया।

उप-प्रणाली स्तर की वार्ता में 8 कंपनियों अर्थात् डांटल हाइड्रोलिक्स, मानेसर, हरियाणा; स्टार वाइन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली; पी एस पी एल, बेंगलूरु; अवसरल टेक्नोलॉजिज, चेन्नई; एक्युरेट इंजीनियरिंग, पुणे; एच बी एल टावर सिस्टम्स लिमिटेड, हैदराबाद; मूग इनक्लुसिव, बेंगलूरु; तथा सिस्टम कंट्रोलस, बेंगलूरु ने भाग लिया।

डी आर डी ओ व्याख्यान

रक्षा विज्ञान मंच (डी एस एस) ने 03 अक्टूबर 2012 को डॉ भगवंतम सभागार, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली में परमाणु ऊर्जा विभाग – होमी भाभा पीठ के प्राध्यापक, परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष तथा परमाणु ऊर्जा विभाग के पूर्व सचिव डॉ श्रीकुमार बनर्जी द्वारा डी आर डी ओ व्याख्यान का आयोजन किया। डॉ श्रीकुमार बनर्जी आई आई टी, खड़गपुर से धातुकर्मीय अभियांत्रिकी में बी टेक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात वर्ष 1967 में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बी ए आर सी), मुंबई से जुड़े। आपने भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बी ए आर सी) में कार्य करने के दौरान आई आई टी, खड़गपुर से पीएच डी की उपाधि भी प्राप्त की। 2004-2010 के दौरान बी ए आर सी के निदेशक के रूप में आपने उन्नत रिऐक्टर प्रौद्योगिकी, ईंधन चक्र प्रौद्योगिकी तथा सामरिक कार्यक्रमों को विकसित करने में अपना नेतृत्व प्रदान किया।

भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र (आर ए सी), डी आर डी ओ के अध्यक्ष प्रोफेसर (डॉ) डी एन रेड्डी ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय भाषण में आपने भारत जैसे देश के लिए अपारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ बनर्जी ने ऊर्जा, पर्यावरण तथा औद्योगिक विकास पर एक उद्बोधक वार्ता प्रस्तुत की। अपने व्याख्यान में आपने भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं तथा परमाणु ऊर्जा की भूमिका विषय पर व्याख्यान दिया। आपने कहा, "भारत में विद्युत उत्पादन तथा आपूर्ति क्षेत्र में परमाणु ऊर्जा की एक सुनिश्चित तथा निर्णायक भूमिका है। एक विकासशील देश होने के नाते भारत की समग्र विद्युत आवश्यकताओं का एक बड़ा भाग अपारंपरिक ऊर्जा स्रोतों से प्राप्त किया जाना है क्योंकि निरंतर बढ़ रही आवश्यकताओं की पूर्ति करने में पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की अपनी सीमाएं हैं।" आपने नाभिकीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता की प्रशंसा की। आपने डॉ होमी भाभा, जिन्होंने भारत के नाभिकीय कार्यक्रम की परिकल्पना की जिसे उनके पश्चात परमाणु ऊर्जा विभाग के समर्पित अधिकारियों तथा इंजीनियरों द्वारा आगे बढ़ाया गया है, द्वारा आरंभ किए गए अग्रणी प्रयासों की प्रशंसा की। डॉ बनर्जी ने अपने व्याख्यान में आगे कहा, "हमारे पारंपरिक संसाधन इतने पर्याप्त नहीं हैं कि हम विद्युत उत्पादन के संदर्भ में किसी महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। घट रहे



डॉ बनर्जी (मध्य) को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए प्रोफेसर रेड्डी।

कोयला भंडारों तथा पनबिजली उत्पादन की सीमित संभावना को देखते हुए देश की भावी विद्युत आवश्यकताओं को नाभिकीय तथा अन्य अपारंपरिक संसाधनों से विद्युत प्राप्त करके पूरा किया जा सकता है। अपारंपरिक स्रोतों से विद्युत उत्पादन की भारी संभावना है तथा इन स्रोतों से विद्युत उत्पादन की दिशा में सुनिश्चित कदम उठाए जाने चाहिए। अपारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की प्रकृति को देखते हुए, जहां कि अन्य अपारंपरिक स्रोत छोटे विकेंद्रित अनुप्रयोगों हेतु उपयुक्त हैं, वहीं बड़े आकार के केंद्रीय विद्युत उत्पादन स्टेशनों के लिए परमाणु बिजली घर उपयुक्त हैं।”

डॉ बनर्जी को रक्षा विज्ञान मंच द्वारा आभार के प्रतीक के रूप में प्रोफेसर डी एन रेड्डी ने एक स्मृति चिह्न भेंट किया डॉ राजीव विज, सचिव, रक्षा विज्ञान मंच (डी एस एफ) ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

◆ रक्षा विज्ञान मंच (डी एस एफ) ने डॉ भगवंतम सभागार, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली में 18 अक्टूबर 2012 को परिवर्तनशील विश्व में अनुसंधान तथा उच्च शिक्षा विषय पर बैंगलूरु स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पी बलराम द्वारा एक डी आर डी ओ व्याख्यान का भी आयोजन किया।

प्रोफेसर बलराम आण्विक जैव-भौतिकी विषय के एक प्रख्यात विशेषज्ञ हैं। आपने आई आई टी, कानपुर से वर्ष 1969 में विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि तथा वर्ष 1972 में अमेरिका के कारनेजी मेलोन विश्वविद्यालय, पीट्सबर्ग से रसायन विज्ञान में पीएच डी की उपाधि प्राप्त की। प्रोफेसर बलराम भारतीय विज्ञान अकादमी, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी तथा दै थर्ड वर्ल्ड अकाडमी ऑफ साइंसेज, ट्रिस्टे, इटली के अध्येता हैं। आपको आपके कार्यों के लिए अनेक पुरस्कार/सम्मान प्रदान किए गए हैं जिनमें 1986 में प्रदान किया गया शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार; अनुसंधान में उत्कृष्टता हेतु वर्ष 1991 में भारतीय विज्ञान संस्थान द्वारा प्रदान किया गया पूर्व छात्र पुरस्कार; वर्ष 1994 में प्रदान किया गया रसायन विज्ञान में टी डब्ल्यू ए एस पुरस्कार; वर्ष 1994 में वैज्ञानिक



डॉ पी के सक्सेना, डॉ वी भुजंग राव, प्रो पी बलराम तथा डॉ राजीव विज (बाएँ से)।

अनुसंधान हेतु प्रदान किया गया जी डी बिरला पुरस्कार; वर्ष 2000 में आई आई टी, कानपुर द्वारा प्रदान किया गया विशिष्ट पूर्व छात्र पुरस्कार; तथा वर्ष 2002 में भारत सरकार द्वारा प्रदान किया गया पद्मश्री पुरस्कार शामिल हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रोफेसर बलराम, डॉ वी भुजंगराव, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन), तथा मुख्य परामर्शदाता, डी एस एफ, श्री जी इलांगोवन, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (उड्डयानिकी तथा वैमानिकी), डॉ पी के सक्सेना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी) तथा डॉ राजीव विज, सचिव, डी एस एफ द्वारा दीप प्रज्वलित करने के साथ हुई। डॉ सक्सेना ने कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। डॉ वी भुजंगराव, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन) ने व्याख्याता का उपस्थित श्रोताओं से परिचय कराया।

प्रोफेसर बलराम द्वारा दिए गए अत्यधिक प्रेरक व्याख्यान की श्रोताओं द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। आपने डॉ भगवंतम सभागार में उपस्थित युवा वैज्ञानिकों के एक विशाल समूह को प्रेरित करने के लिए अपनी कल्पना तथा वास्तविक सफलताओं और विफलताओं के अनुभव बताए।

इस अवसर पर रक्षा विज्ञान मंच की ओर से डॉ भुजंगराव द्वारा प्रोफेसर बलराम को एक स्मृति चिह्न भेंट किया गया। डॉ राजीव विज द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

मानव संसाधन विकास गतिविधियां

सम्मेलन/ सेमिनार/ विचार-गोष्ठी/ प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/ बैठकें

सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र, बेंगलूरु

सैन्य उड़नयोग्यता के क्षेत्रीय केंद्र (एफ एंड एफ – एफ ओ एल), बेंगलूरु ने सोसाइटी फॉर फेल्योर ऐनालिसिस, बेंगलूरु चैप्टर तथा एच ए एल (एफ एंड एफ) के सहयोग से 29 सितंबर 2012 को सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), बेंगलूरु में **फेल्योर ऐनालिसिस और एरोस्पेस कास्टिंग्स एंड फोर्जिंग** विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया। डॉ के तमिलमणि, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं सी ई (ए), सेमीलेक तथा अध्यक्ष, एस एफ ए ने अपने उद्घाटन भाषण में रक्षा अनुप्रयोग हेतु उपकरणों के संघटकों तथा उनके रखरखाव के संबंध में सुरक्षित अभिकल्प को प्रोत्साहन प्रदान करने के महत्त्व पर बल दिया। एरोस्पेस कास्टिंग तथा फोर्जिंग में विफलता विश्लेषण तथा विफलता निवारण के मूलभूत तत्व, एरोस्पेस कास्टिंग तथा फोर्जिंग के क्षेत्र में प्रयुक्त नवीन तकनीकों तथा संचकन विषय से संबंधित अध्ययन पर सेमिनार के दौरान व्यापक रूप में चर्चा की गई। श्री के नरेश बाबू, प्रबंध निदेशक, एच ए एल मुख्य अतिथि थे तथा श्री बी दत्ता वरिष्ठ अभियांत्रिकी प्रबंधक, यू टी ए एस, बेंगलूरु सम्मानित अतिथि थे।

रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र, दिल्ली

डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं को डी आर डी ओ की आधिकारिक वेबसाइट पर अपनी निविदाओं को अपलोड करने हेतु अवगत कराने के लिए रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली के श्री सतपाल सिंह, तकनीकी अधिकारी 'बी' द्वारा प्रयोगशाला के प्रतिनिधियों को क्षेत्र-वार प्रशिक्षण प्रदान किया गया। आपने निविदाओं को वेबसाइट पर डालने के संबंध में मौके पर प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), बेंगलूरु; रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद तथा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (इंजीनियर्स) [आर एंड डी (ई)], पुणे का दौरा किया। सितंबर तथा अक्टूबर 2012 के महीनों के दौरान

बेंगलूरु, हैदराबाद तथा पुणे क्षेत्रों में अवस्थित डी आर डी ओ की 20 प्रयोगशालाओं/ स्थापनाओं को कवर किया गया। इन प्रशिक्षण सत्रों में डी आर डी ओ के 100 से भी अधिक अधिकारियों/ कर्मचारियों ने भाग लिया।

डी आर डी ओ मुख्यालय

डी आर डी ओ ने कंप्यूटर विज्ञान तथा इंजीनियरी विभाग, बजरंग इंजीनियरिंग कॉलेज, वेपामपट्ट, त्रिवल्लूर, तमिलनाडु में **क्लाउड कंप्यूटिंग तथा इसके औद्योगिक अनुप्रयोग** विषय पर 14-15 सितंबर 2012 के दौरान दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला को प्रायोजित किया। डॉ एस नेदुचेरियन, प्रिंसिपल, बजरंग इंजीनियरिंग कॉलेज ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ एम जी भास्करन, अध्यक्ष ने अध्यक्षीय भाषण दिया। डॉ जी वी उमा, प्रोफेसर/ प्रमुख, सूचना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग, अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई जो मुख्य अतिथि थे, ने उद्योगों में क्लाउड अनुप्रयोग के उपयोग पर विस्तार से चर्चा की। डॉ एस बोस, सहायक प्रोफेसर, अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई ने क्लाउड में सेवा के रूप में अवसंरचना के विषय पर बातचीत की। अन्य वक्ताओं, डॉ आर विजय राजेश्वरन, सी ई ओ, VI माइक्रोसिस्टम्स, चेन्नई ने नए प्रौद्योगिकीय विकास को प्रदर्शित करने के लिए कुछ ग्राफीय उदाहरणों के बारे में बात की।

रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद

रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद ने 12 अक्टूबर 2012 को आई पी



व्याख्यान देते हुए श्री अविनाश कुमार।

आर जागरूकता, तथा पेटेंट क्लिनिक विषय पर श्री अविनाश कुमार, वैज्ञानिक 'एफ', ई आर एंड आई पी आर निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय द्वारा एक व्याख्यान का आयोजन किया। इस अवसर पर श्री पी एन यादगिरि राव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं सह-निदेशक, डी एल आर एल ने स्वागत भाषण दिया तथा सुरक्षित रक्षण प्रौद्योगिकी नवप्रवर्तन में आई पी आर के महत्त्व पर विशेष रूप से चर्चा की। श्री के एस सी मोलेश्वर राव, वैज्ञानिक 'एफ' पाठ्यक्रम निदेशक थे तथा श्री संजय पांडव, वैज्ञानिक 'ई' उप-पाठ्यक्रम निदेशक थे।

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना, बालासोर

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), बालासोर ने 8-12 अक्टूबर 2012 के दौरान **आयुध परीक्षण तथा मूल्यांकन में सुरक्षा** विषय पर एक सतत शिक्षा कार्यक्रम (सी ई पी) का आयोजन किया। इस पाठ्यक्रम में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह पाठ्यक्रम प्रतिभागियों को गतिक परीक्षण के दौरान सुरक्षा जागरूकता के संबंध में अवगत कराने के लिए तैयार किया गया था। इस पाठ्यक्रम में प्रमुख बल सशस्त्र प्रक्रमण में सुरक्षा; विस्फोटक सुरक्षा तथा युद्धोपकरणों का रखरखाव; औद्योगिक सुरक्षा; कार्यशाला सुरक्षा; एस टी ई सी नियमावली; आयुध परीक्षण के दौरान सुरक्षा; आयुध सुरक्षा; रेंज सुरक्षा; पर्यावरणीय सुरक्षा; यंत्रीकरण सुरक्षा; व्यावसायिक स्वास्थ्य तथा जोखिम; अग्नि सुरक्षा तथा वैयक्तिक संरक्षी उपकरण विषय पर दिया गया। इन विषयों पर प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई) के विशेषज्ञ व्याख्याताओं द्वारा विस्तार से चर्चा की गई।

डॉ एन नायक, वैज्ञानिक 'एफ', पी एक्स ई समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित



पाठ्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर प्रतिभागियों द्वारा दीप प्रज्वलन।

हुए। डॉ ए के सानिग्रही, वैज्ञानिक 'एफ' पाठ्यक्रम निदेशक और साथ ही पाठ्यक्रम समन्वयक भी थे।



प्रतिभागियों के साथ डॉ बालाजी।

अनुसंधान केंद्र इमारत, हैदराबाद

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद ने 31 अक्टूबर 2012 को आर सी आई में **कंप्यूटरीकरण** विषय पर एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया। श्री एन वेंकटेश, वैज्ञानिक 'एफ' तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ओ एल आई सी) के सदस्य-सचिव, आर सी आई ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा आर सी आई के हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। श्री काजिम अहमद तथा श्री विनोद कुमार महर, वैज्ञानिक 'सी' ने क्रमशः राजभाषा नीति, नियमों और विनियमों एवं कार्यशाला के मुख्य विषय पर व्याख्यान दिए जिसमें मुख्य रूप से ई आर पी क्रियान्वयन पर विशेष बल दिया गया। डॉ सी जी बालाजी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं सह-निदेशक, आर सी आई ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। श्री के राम शर्मा, वैज्ञानिक 'जी' तथा उपाध्यक्ष, ओ एल आई सी ने प्रतिभागियों को स्मृति चिह्न प्रदान किए। श्री आर जयसिंह, तकनीकी अधिकारी 'सी' ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

क्षेत्रीय सैन्य उड़नयोग्यता केंद्र, कानपुर

क्षेत्रीय सैन्य उड़नयोग्यता केंद्र (आर सी एम ए), कानपुर ने 8-12 अक्टूबर 2012 के दौरान **आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक युद्ध में परिवहन वायुयान की भूमिका** विषय पर एक सी ई पी पाठ्यक्रम का आयोजन किया। डॉ अरविंद कुमार सक्सेना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, रक्षा सामग्री तथा भंडार अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डी एम एस आर डी ई), कानपुर ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। इस पाठ्यक्रम में डी आर डी ओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं, वैमानिक विकास एजेंसी (ए डी

ए), हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एच ए एल), वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय (डी जी ए क्यू ए), तटरक्षक बल, भारतीय वायु सेना से 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं [अर्थात वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), यंत्र अनुसंधान तथा विकास स्थापना (आई आर डी ई)], आई आई टी, कानपुर, ई सी आई एल तथा एच ए एल से आए व्याख्याताओं द्वारा इस पाठ्यक्रम के दौरान अपने व्याख्यान दिए गए जिनमें इलैक्ट्रॉनिक युद्ध के क्षेत्र में हुए नवीनतम विकास, सैन्य परिवहन वायुयान डिजाइन, परीक्षण तथा प्रमाणीकरण से संबंधित विषयों को शामिल किया गया। आई आई टी, कानपुर स्थित नेशनल विंड टनल फैसिलिटी (एन डब्ल्यू टी एफ) तथा उड़ान परीक्षण प्रयोगशाला एवं एच ए एल, कानपुर स्थित डोर्नियर विमान निर्माण सुविधा का दौरा भी आयोजित किया गया। श्री सीताराम, क्षेत्रीय निदेशक, आर सी एम ए – के पाठ्यक्रम निदेशक थे तथा श्री अमरजीत दास, वैज्ञानिक 'एफ' पाठ्यक्रम सन्वयक एवं श्री नितिन वर्मा, वैज्ञानिक 'डी' उप-पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना, मनाली

हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे), मनाली ने पर्वतीय मौसमविज्ञान केंद्र (एम एम सी), श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर में 12 अक्टूबर 2012 को हिम आच्छादित क्षेत्रों में अवधाव जोखिम मूल्यांकन तथा प्रशमन एवं सैनिक टुकड़ियों की सुरक्षित आवाजाही हेतु प्रौद्योगिकियों के

संबंध में प्रयोक्ताओं के लिए एक **कार्यशाला** का आयोजन किया। इस पाठ्यक्रम में पंद्रह कोरों के हिम आच्छादित क्षेत्रों और ग्लेशियर क्षेत्रों में तैनात विभिन्न यूनिटों से 42 सैन्य अधिकारियों ने भाग लिया। ब्रिगेडियर टी पी एस रावत, वी एस एम, मुख्य इंजीनियर, बीकॉन उद्घाटन समारोह में सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। श्री अश्वघोष गंजू, निदेशक, सासे ने मुख्य अतिथि तथा सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा, "इस कार्यशाला का उद्देश्य उत्तरी हिमायल के हिम आच्छादित क्षेत्रों में तैनात सैन्य टुकड़ियों को हिम तथा अवधाव संबंधी पहलुओं के बारे में शिक्षित करना है।" ब्रिगेडियर रावत ने इस प्रकार की कार्यशाला को आयोजित करने में



उद्घाटन भाषण देते हुए श्री गंजू।

सासे द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की तथा प्रतिभागियों को सासे द्वारा प्रदान की गई सूचना का सर्वाधिक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। कर्नल सुरेंद्र शर्मा, ओ आई सी, एम एम सी, श्रीनगर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

वार्षिक/स्थापना दिवस समारोह

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला, हैदराबाद

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद ने 15 अक्टूबर 2012 को अपना 49वां वार्षिक दिवस समारोह आयोजित किया। इस अवसर पर श्री एम नारायण राव, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एम आई डी एच ए एन आई मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। डॉ जी मालाकोंडैय्या, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डी एम आर एल ने



डॉ जी मालाकोंडैय्या (मध्य में) के संग मंचासीन विभूतिगण।

वर्ष 2011 के दौरान प्रयोगशाला की उपलब्धियों के संबंध में एक संक्षिप्त ब्योरा प्रस्तुत किया। डी एम आर एल की स्थापना के 50वें वर्ष के उपलक्ष्य में डी एम आर एल के 50वें वर्ष के प्रतीक के रूप में डॉ ए एम श्रीराममूर्ति, पूर्व निदेशक, डी एम आर एल तथा श्री आर वी सुब्रामणियम पूर्व निदेशक, परियोजना द्वारा एक लोगो का अनावरण किया गया। इस लोगो को डी एम आर एल के एस टी ए-ग श्री विश्वजीत मोहपात्रा द्वारा अभिकल्पित किया गया है।

श्री राव ने अपने भाषण में डी एम आर एल की उपलब्धियों की सराहना की। रक्षा तथा अन्य सामरिक उपयोगों हेतु उन्नत पदार्थों के विकास में डी एम आर एल तथा एम आई डी एच ए एन आई के बीच घनिष्ठ सहयोगात्मक संबंधों पर प्रकाश डालते हुए श्री राव ने भविष्य में ऐसे और अन्य सहयोगात्मक प्रयासों को करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर आपने वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों तथा अन्य कर्मचारियों को डी आर डी ओ के विभिन्न प्रयोगशाला स्तरीय पुरस्कार प्रदान किए। डॉ मालाकोंडैय्या ने 20 वर्षों की सेवा पूरी कर चुके। डी एम आर एल के कर्मचारियों को स्मृति चिह्न प्रदान किया। इस अवसर पर डी एम आर एल के कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

स्थापना दिवस समारोहों के हिस्से के रूप में विभिन्न खेल कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। डॉ मालाकोंडैय्या, उत्कृष्ट वैज्ञानिकों एवं डी एम आर एल के सह-निदेशकों, डॉ अमोल ए गोखले, तथा डॉ अशोक कुमार गोगिया ने खेल कार्यक्रमों के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना, बालासोर

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर ने अत्यधिक उत्साह तथा उमंग के साथ 07 नवंबर 2012 को अपना 118वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया। आयोजित किए गए कार्यक्रमों में मैराथन दौड़ तथा प्रातःकाल में आयोजित किए गए खेल कार्यक्रम एवं संध्याकाल आयोजित किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल थे।

श्री आर अम्पाउराज, निदेशक, पी एक्स ई ने मैराथन दौड़ का उद्घाटन किया जिसमें 100 से भी अधिक कर्मचारियों ने भाग लिया तथा एम टी रियर और

सेंट्रल स्कूल चौक से लेकर हेमकापदा चौक तथा भारी उत्साह के साथ दौड़े।

डॉ डी के खरात, निदेशक, आयुध निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय, नई दिल्ली प्रातःकाल में आयोजित किए गए समारोह में मुख्य अतिथि थे। डॉ खरात ने अपने भाषण में पी एक्स ई द्वारा विभिन्न आयुधों एवं युद्धोपकरणों के परीक्षण तथा मूल्यांकन के क्षेत्र में किए गए योगदान की प्रशंसा की। इस अवसर पर श्री अम्पाउराज ने पी एक्स ई के 104 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए तथा 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके अधिकारियों तथा कर्मचारियों को सम्मानित किया। पी एक्स ई की प्रथम महिला श्रीमती चित्रा अम्पाउराज ने विभिन्न खेल कार्यक्रम के विजेताओं को खेल पुरस्कार प्रदान किए।

डी आर डी ओ सभागार, चांदीपुर में आयोजित किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम में एम वी के वी प्रसाद, निदेशक, एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर) मुख्य अतिथि थे तथा श्री आर पी कोचे, आई पी एस, पुलिस महानिरीक्षक, बालासोर सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित हुए थे। इस अवसर पर पी एक्स ई के कर्मचारियों के बच्चों ने नृत्य तथा गायन की प्रस्तुति की। मुख्य अतिथि, सम्मानित अतिथि तथा पी एक्स ई के निदेशक द्वारा विभिन्न प्रयोगशाला स्तरीय डी आर डी ओ पुरस्कार प्रदान किए गए। श्री एस पाधि, वैज्ञानिक 'डी' को वर्ष का प्रयोगशाला वैज्ञानिक पुरस्कार प्रदान किया गया तथा श्री जी सी घोष, निजी सचिव ए को वर्ष का प्रमाण पुरुष पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री गुही मांझी, टी एन सी की पुत्री सुश्री अनिशा कुमारी मांझी को इस अवसर पर प्रमाण युवा प्रतिभा खोज पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री ए बोस, वैज्ञानिक 'एफ' स्थापना दिवस समारोह के अध्यक्ष थे।

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह, दिल्ली

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली ने 19 अक्टूबर 2012 को अपना 49वां प्रयोगशाला स्थापना दिवस समारोह मनाया। इस अवसर पर डॉ के डी नायक, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एम ई डी, एम आई एस टी एवं साइबर सिस्टम्स) मुख्य अतिथि थे। मेटकॉफ हाउस तथा तिमारपुर स्थित सहायक प्रयोगशालाओं के निदेशक तथा डी आर डी ओ

मुख्यालय के तकनीकी निदेशक भी इस अवसर पर उपस्थित हुए। इस समारोह में एस ए जी के पूर्व कर्मचारियों ने भी भाग लिया। इस कार्यक्रम के साथ एस ए जी के 50वें वर्ष की शुरुआत हुई जिसे देखते हुए यह कार्यक्रम इसके लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। डॉ पी के सक्सेना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एस ए जी ने अतिथियों का स्वागत किया। अपने उद्घाटन भाषण में आपने गत वर्ष के दौरान एस ए जी की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। आपने क्रिप्टो ऐनालिसिस के चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरा करने में एस ए जी द्वारा अपनाए जा रहे बहु-विषयी दृष्टिकोण के बारे में विशेष रूप से चर्चा की। आपने भविष्य हेतु आयोजित क्रियाकलापों पर भी संक्षेप में बातचीत की।

डॉ के डी नायक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में एस ए जी द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की और कहा कि एस ए जी द्वारा जिन समस्याओं को सुलझाया जाता

है, वे अत्यधिक कठिन प्रकार की होती हैं। आपने सूचना सुरक्षा के क्षेत्र में हो रहे विकास के कारण उत्पन्न हो रही चुनौतियों का सामना करने के लिए उपकरणों तथा तकनीकों को विकसित करने के लिए एस ए जी के वैज्ञानिकों को प्रेरित किया। डॉ नायक ने एस ए जी की वार्षिक तकनीकी पत्रिका चक्रव्यूह का भी विमोचन किया। मुख्य अतिथि द्वारा एस ए जी के उत्कृष्ट अधिकारियों तथा कर्मचारियों को डी आर डी ओ के प्रयोगशाला स्तरीय पुरस्कार प्रदान किए गए। खेल कार्यक्रमों के विजेताओं को डॉ सक्सेना द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। डी आर डी ओ में 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके कर्मचारियों को स्मृति चिह्न भेंट करके सम्मानित किया गया। विभिन्न खेल कार्यक्रमों को आयोजित किए जाने के अतिरिक्त इस समारोह के दौरान एस ए जी के सदस्यों द्वारा एक विशाल सांस्कृतिक कार्यक्रम की भी प्रस्तुति की गई।

कार्मिक समाचार

नियुक्तियां

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरु



श्री संजय बर्मन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने 01 नवंबर 2012 से कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरु के निदेशक के रूप में कार्यभार संभाला। आपने संबलपुर विश्वविद्यालय, ओडीशा से वर्ष 1985 में विज्ञान स्नातक (इलैक्ट्रॉनिक्स तथा दूरसंचार अभियांत्रिकी) की उपाधि तथा वर्ष 1995 में आई आई टी-के, कानुपर से सिग्नल प्रोसेसिंग विषय में एम टेक की उपाधि प्राप्त की। आप वर्तमान में आई आई टी-मद्रास, चेन्नई से पुनः विन्यासयोग्य कंप्यूटिंग के क्षेत्र में पीएच डी की उपाधि हेतु अध्ययनरत हैं।

श्री बर्मन वर्ष 1986 में बैंगलूरु स्थित डी आर डी ओ की एक प्रमुख प्रयोगशाला इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई) से जुड़े। नवंबर 2000 में आपका केयर, बैंगलूरु में स्थानांतरण हो गया। वर्तमान में आप संचार, नेटवर्किंग, सुरक्षा तथा संबद्ध विषयों के क्षेत्र में अत्यधिक रुचिपूर्वक कार्य कर रहे हैं। निदेशक के

रूप में नियुक्ति से पूर्व आप केयर की संचार प्रणाली तथा सुरक्षा प्रभाग के प्रमुख थे, जहां आपके समूह ने विभिन्न संचार लिंकों के लिए नूतन संचार प्रणालियों तथा उच्च कोटि के सुरक्षा समाधानों को अभिकल्पित किया।

आपने अनेक सुरक्षा समाधानों के अभिकल्पन में अपना योगदान दिया है जिनका उत्पादन आरंभ हो चुका है और जिन्हें क्षेत्र में प्रयोग में भी लाया जा रहा है। आपको अनेक गणतंत्र दिवस पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। आपको वर्ष 1999 में सर सी वी रमन युवा वैज्ञानिक पुरस्कार; वर्ष 2005 में वर्ष का प्रयोगशाला वैज्ञानिक पुरस्कार; वर्ष 2005, 2006 और 2007 में सुरक्षित संचार प्रणालियों को विकसित करने, जिसका उत्पादन किया जा रहा है, के लिए डी आर डी ओ अग्नि पुरस्कार तथा निष्पादन उत्कृष्टता पुरस्कार, तथा वर्ष 2010 में भारत के प्रधान मंत्री से डी आर डी ओ वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

श्री बर्मन क्रिप्टोलॉजी रिसर्च सोसाइटी ऑफ इंडिया के संस्थापक सदस्य हैं। श्री बर्मन के क्रिप्टोग्राफी, सुरक्षा तथा पुनः संरूपणीय कंप्यूटिंग से संबंधित अनेक

लेख राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए हैं। आपने क्रिप्टोग्राफी तथा सुरक्षा प्रणालियों के क्षेत्र में अनेक आमंत्रित व्याख्यान दिए हैं तथा शिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया है। आपने अपने इस क्षेत्र में शिक्षा जगत के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखा है तथा शैक्षणिक संस्थाओं को अपने पाठ्यक्रमों में सुरक्षा संबंधी विषयों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), बालासोर



श्री आर अप्पाउ राज, वैज्ञानिक 'जी' को 01 अक्टूबर 2012 से प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर में निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है। श्री अप्पाउ राज ने वर्ष 1982 में मद्रास प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नई से वैमानिकी अभियांत्रिकी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। आपने वर्ष 1984 में आई आई टी-मद्रास, चेन्नई से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। तदुपरांत आपने दो वर्षों तक आई आई टी-मद्रास, चेन्नई में कार्य किया तथा उच्च गति के सेंट्रीफ्यूज स्टैबिलिटी प्रॉब्लम के लिए अनुकार मॉडल विकसित किया। आप अक्टूबर 1986 में रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद से जुड़े। आपने पृथ्वी के हार्डवेयर-इन-लूप अनुकार क्रियाकलाप में योगदान किया। नवंबर 1990 में आपने एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), चांदीपुर में वैज्ञानिक 'सी' के रूप में कार्यभार संभाला। आई टी आर में अपनी सेवा के दो दशकों के दौरान आपने मृदु कंप्यूटिंग तकनीकों का प्रयोग करके अत्याधुनिक रेंज सुरक्षा अनुकार मॉडल स्थापित किया। आपने डेटा फ्यूजन सॉफ्टवेयर को भी संस्थापित किया है जिसे पेटेंट करा लिया गया है। आपने डब्ल्यू जी एस-84 मॉडल का प्रयोग करके सर्वेक्षण विधि स्थापित की है तथा रेंज संवेदक अंशांकन के लिए डी जी पी एस अनुकार तथा अंशांकन विधि संस्थापित की है। आपने आकाशीय लक्ष्य प्रणाली स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

रेंज सुरक्षा अधिकारी के रूप में श्री अप्पाउ राज ने डी आर डी ओ के सभी प्रमुख मिसाइल कार्यक्रमों के लिए सुरक्षित लांच सुनिश्चित किया है। आपके 30 सम्मेलन पत्र तथा 5 अनुसंधान पत्र प्रकाशित हुए हैं।

आपने बहोस, एल आर एस ए एम तथा आकाशीय लक्ष्यों सहित विभिन्न परियोजना क्रियाकलापों के लिए रूस, इजरायल, इटली, स्पेन तथा यूनान का दौरा किया है। आपने ओ टी बी रेंज, दक्षिण अफ्रीका तथा नौसैनिक परीक्षण रेंज, रूस का भी दौरा किया है। आपने हवाई तथा ऑरलांडो में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी अपने शोध पत्रों को प्रस्तुत किया है। श्री अप्पाउ राज को आई टी आर, चांदीपुर में वास्तविक काल उड़ान सुरक्षा विशेषज्ञ प्रणाली तथा सुरक्षित लांचिंग प्रणाली विकसित करने में योगदान के लिए वर्ष 2012 में वर्ष के डी आर डी ओ वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आपको वर्ष 2008 में लीक से हटकर किए गए अनुसंधान/उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए डी आर डी ओ पुरस्कार प्रदान करने के अतिरिक्त ब्रह्मोस, बी05, आकाश तथा प्रोग्राम ए डी में सफलता प्राप्त करने के लिए डी आर डी ओ द्वारा अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

उच्च योग्यता अर्जन

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद



श्री चौधरी वी राम मोहन, वैज्ञानिक 'एफ', उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद को रॉकेट मोटर नोजल के एक प्ररूपी फ्लैक्स बियरिंग जॉइंट से संबंधित अभिकल्पन, प्रतिरूपण तथा प्रायोगिक वैधीकरण विषय पर शोध प्रबंध के लिए जवाहरलाल नेहरू प्रौद्योगिकीय विश्वविद्यालय (जे एन टी यू), हैदराबाद द्वारा पीएच डी की उपाधि प्रदान की गई है।

सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान तथा विकास केंद्र (एम टी आर डी सी), बेंगलूरु



श्रीमती एम सुमति, वैज्ञानिक 'डी', एम टी आर डी सी, बेंगलूरु को मिलिमीटर-तरंग प्रगामी तरंग नलिका हेतु ब्रॉडबैंड तथा उच्च दक्षता के वलित तरंग पथनिर्धारित मंद तरंग संरचना के विश्लेषण विषय पर उनके शोध प्रबंध के लिए भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूरु से पीएच डी की उपाधि प्रदान की गई है।

रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील) में रक्तदान शिविर का आयोजन

रक्षा इलैक्ट्रॉनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील), देहरादून तथा आई एम ए रक्त बैंक, देहरादून ने 25 सितंबर 2012 को संयुक्त रूप से एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में डील के 47 पुरुष तथा 5 महिला कर्मचारियों ने काफी उत्साह के साथ रक्तदान किया।



डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र (केयर), बैंगलूरु



डॉ नायक केंद्र की गतिविधियों में रूची लेते हुए।

20 अक्टूबर 2012: डॉ के डी नायक, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक (एम ई डी, एम आई एस टी तथा साइबर प्रणाली)

हिम तथा अवधाव अध्ययन स्थापना (सासे), चंडीगढ़



एच पी सी डेटा केंद्र का उद्घाटन करते हुए डॉ सुंदरेश।

01 नवंबर 2012: डॉ एस सुंदरेश, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (ए सी ई एंड एस आई) की अध्यक्षता में कार्यकारी मंडल परियोजना समीक्षा समिति। जहां इस समिति ने प्रयोगशाला में विभिन्न चालू परियोजनाओं की समीक्षा की। विभिन्न परियोजनाओं में हुई प्रगति तथा उनके निष्पादन में उत्पन्न हो रही बाधाओं के संबंध में परियोजना प्रमुखों द्वारा प्रस्तुतीकरण किए गए। डॉ सुंदरेश ने अनुसंधान तथा विकास केंद्र (आर डी सी), चंडीगढ़ में स्थापित उच्च निष्पादन कंप्यूटिंग (एच पी सी) डेटा केंद्र का भी उद्घाटन गया।

चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़



डॉ आर चिदम्बरम को गैस गन सुविधा के बारे में संक्षेप में बताते हुए डॉ मनजीत सिंह।

15 अक्टूबर 2012: भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार डॉ आर चिदम्बरम। इस दौरान डॉ मनजीत सिंह, निदेशक, टी बी आर एल ने उनके साथ प्रयोगशाला द्वारा किए जा रहे विभिन्न क्रियाकलापों, अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा कुछ अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाओं एवं गैस गन सुविधा के बारे में संक्षेप में बातचीत की।

मुख्य सम्पादक
सुरेश कुमार जिंदल

सम्पादक
फूलदीप कुमार

सम्पादकीय सहायक
अशोक कुमार

मुद्रण
एस के गुप्ता
हंस कुमार

विपणन
आर पी सिंह

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फ़ैक्स : 011-23902500 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in